ISSN 0975-8321

# वाङ्मय त्रैमासिक

वर्ष : 11 जुलाई 2014

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद
मोबाइल : 9044918670

सलाहकार सम्पादक
डॉ. मेराज अहमद

वाङ्मय पत्रिका अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध www.vangmay.com

परामर्श मण्डल
प्रो. रामकली सराफ (बी.एच.यू),
मूलचन्द सोनकर (वाराणसी ),
डॉ. शगुफ़्ता नियाज़ (अलीगढ़),

सम्पादकीय सम्पर्क
205- ओहद रेजीडेंसी, नियर पान वाली कोठी, दोदपुर रोड,
सिविल लाइन, अलीगढ़-202002
मोवाइल : 9044918670/9719304668
E-mail : vangmaya2007@yahoo.co.in
vangmaya @gmail .com

सहयोग राशि :
एक प्रति : 40 रु., व्यक्तिगत शुल्क पाँच वर्ष के लिए 1000 रु., वार्षिक शुल्क संस्थाओं के लिए : 300 रु., द्विवार्षिक शुल्क संस्थाओं के लिए : 500 रुपये, व्यक्तिगत आजीवन सदस्य : 2000 रुपये, (दस वर्ष के लिए) संस्थाओं के लिए आजीवन : 3,000/(दस वर्ष के लिए)

शोध आलेख

# आधुनिक युग के शैक्षिक क्षेत्र में भारतीय नारी के आदर्श

एन. मोहना*
डॉ. शशि प्रभा जैन**

नारी शील, राष्ट्रीय रक्षा तथा कर्त्तव्य की खान है। जहाँ स्त्रियों को उचित स्थान दिया जाता है तथा उनकी शिक्षा का भी उचित प्रबंध किया जाता है, वही देश उन्नति कर सकते हैं। राष्ट्र में स्त्रियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, उन्हें सम्मानित जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाने का साधन शिक्षा ही है जिससे वह समाज में आदर्श प्राप्त कर सकती हैं। शिक्षा के द्वारा नारी अपने आपको भावी जीवन के लिए सम्बद्ध करता है तो दूसरी ओर शिक्षा के माध्यम से वैयक्तिक और सामाजिक जीवन की प्रतिस्थापना की जाती है।

## शिक्षा का स्वरूप

शिक्षा पद की निष्पत्ति शिक्ष् धातु से होती है। इसका अर्थ यह है कि विद्या को प्राप्त करना। प्राचीन आचार्यों ने शिक्षा के अन्तर्गत चरित्र निर्माण को बहुत अधिक महत्त्व दिया था। संस्कृत में सूक्ति है- "विद्या ददाति विनियम्"। इसका अभिप्राय है कि शिक्षा को प्राप्त करके विद्यार्थी का चरित्र शुद्ध और पवित्र हो जाना चाहिए।

## आदर्श स्त्री

भरण का आरंभिक स्थिति एक सूक्ष्म बिंदु मात्र होती है। माता की चेतना और काया उसमें प्रवेश परिपक्व बनने की स्थिति तक पहुँचाती है। असमर्थ-अविकसित स्थिति में माता ही एक अवलंबन होती हैं, जो स्तनपान करती और पग-पग पर उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। वेदमाता, देवमाता व विश्वमाता के रूप में जिस त्रिपदा की पूजा-अर्चना की जाती है, प्रत्यक्षतः उसे नारी ही कहा जा सकता है। इसलिए स्त्री शिक्षा बहुत आवश्यक है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का कथन है-"पारिवारिक गाड़ी के सुसंचालन में स्त्री-पुरुष दो पहिए के स्वरूप हैं। अतः पारस्परिक समझ पैदा करने और उत्तरदायित्व निभाने की दृष्टि से स्त्री-पुरुष दोनों को शिक्षित होना आवश्यक है। एक पहिया के विपरीत स्थिति में रहने के कारण दाम्पत्य रूपी गाड़ी का सुसंचालन सुविधाजनक और शांतिपूर्ण ढंग से नहीं हो सकेगा।"[1] माता का कलेवर और संस्कार बालक बनकर इस संसार में प्रवेश पाता और प्रगति की दिशा में कदम बढ़ाता है। वह मानुषी दीख पड़ते हुए भी वस्तुतः देवी है। उसके नाम के साथ प्रायः देवी शब्द जुड़ा भी रहता है। श्रेष्ठ एवं वरिष्ठ उसी का मानना चाहिए। भाव-संवेदना धर्म-धारणा और सेवा-साधना के रूप में उसी की वरिष्ठता को चरितार्थ होते देखा जाता है। उसके रोम-रोम में कृतज्ञता, श्रद्धा और आराधना की भाव उमड़ते रहना चाहिए। इस कामधेनु का जो जितना अनुग्रह प्राप्त कर सकने में सफल हुआ है उसने उसी अनुपात में प्रतिभा, संपदा, समर्थता और प्रगतिशीलता जैसे वरदानों से अपने को लाभान्वित किया है। नारी प्रेम, स्नेह, करुणा एवं मातृत्व की प्रतिमूर्ति है।

## विद्या की अवधारणा

विद्या पद की निष्पत्ति विद् धातु से होती है। इसका अर्थ है - ज्ञान प्राप्त करना। अतः विद्या पद के अर्थ हैं ज्ञान, विज्ञान, अध्ययन, शिक्षण, दर्शन, कला, शिक्षा और शास्त्र, साहित्य आदि। मनुष्य की प्रतिभा और बुद्धि विद्या पर ही निर्भर है। मनु ने विद्याध्ययन के संबंध में योग्य उपदेश दिया है- "जहाँ धर्म और अर्थ न हो, जहाँ सेवा की भावना न हो, वहाँ विद्या का प्रवचन नहीं करना चाहिए। यह ऐसा ही है, जैसा कि ऊसर खेत में उत्तम बीज बोना। ब्रह्मचारी अध्यापक चाहे विद्या के साथ मर जावे और घोर आपत्ति का समय हो, तो भी अयोग्य को विद्या न देवे। विद्या ने ब्राह्मण के पास आकर कहा कि मैं तुम्हारी निधि हूँ। तुम मेरी रक्षा करो। ईर्ष्यालु व्यक्ति को मुझे मत दो। इससे मेरी शक्ति में वृद्धि होगी। जिसको तुम पवित्र समझो, नियम पालन करने वाला ब्रह्मचारी समझो, उसी को मुझे दो। प्रमाद से रहित व्यक्ति ही मेरी रक्षा कर सकता है।"[2] शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के मन को मुक्त करना है, न कि उसे बाँधे हुए चौखटों में बन्द करना है। उसके शारीरिक और बौद्धिक श्रम में सन्तुलन बनाना है ताकि उसका जीवन सर्वांगीण विकास कर सके।"[3] - जवाहरलाल नेहरू

नारी शिक्षा की आवश्यकता

पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर देश के विकास में भारतीय नारी ने बराबर भाग लेती हुए रूढ़िवादी जीवन को तिलांजलि देकर नवयुग का आह्वान किया। शिक्षा के क्षेत्र भी इसमें शामिल है। ब्रह्मचर्य-व्रत से सम्पन्न शिक्षित कन्या को ही गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त था। महिला के शिक्षित होने पर उसके पूरे परिवार को शिक्षा का लाभ मिलता है। शिक्षा, प्रकाश का वह स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ-प्रदर्शन करती है। शिक्षा को मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा गया है। इससे ही जीवन में सफलता को प्राप्त करता है। "ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है। उससे मनुष्य सभी तत्त्वों के अर्थों को देखने में समर्थ हो जाता है। उसके सभी विघ्न दूर हो जाते हैं। तीनों लोकों में उसकी सभी प्रवृत्तियाँ सही दिशा में होती है।"[4]

शिक्षा से ही स्त्री के बल, बुद्धि, धैर्य, कार्यदक्षता और चिन्तनशक्ति में वृद्धि होती है। शिक्षा से परिष्कृत, विकसित और परिपक्व बुद्धि ही स्त्री का बल है। शिक्षा स्त्री को इस लोक में तो सफल बनाती ही है, मृत्यु के बाद मोक्ष भी प्राप्त कराती है।

नारी शिक्षा का महत्त्व

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग स्त्री शिक्षा का महत्त्व इस प्रकार बताया है कि स्त्री शिक्षा के बिना लोग शिक्षित नहीं हो सकते। महिलाओं के प्रारंभिक और व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करनी चाहिए। स्त्री पृथ्वी की कल्पलता है। महात्मा गाँधी ने भारतीय नारी के आदर्श के विषय में कहा है - "नारी त्याग की मूर्ति है। जब वह कोई चीज़ शुद्ध व सही भावना से करती है, तब पहाड़ों को भी हिला देती है। मैंने स्त्री को सेवा और त्याग की भावना का अवतार मानकर उसकी पूजा की है।"[5]

शिक्षा के अभाव में महिलाओं की जीवन अनियन्त्रित होकर बिना पतवार की नाव के समान संसार सागर में डोलता रहता है। "विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान होने पर भी यदि व्यक्ति में अन्तर्दृष्टि का विकास और आत्म-ज्योति की उपलब्धि नहीं हुई है तो वह व्यक्ति मूर्ख ही है क्योंकि क्रियावान् अर्थात् व्यावहारित ज्ञान से युक्त व्यक्ति ही सच्चे अर्थों में शिक्षित है।"[6]

स्त्री के लिए शिक्षा प्रकाश का वह स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ-प्रदर्शन करती है। नारी के लिए शिक्षा प्रमुख साधन है। यदि भावी-जीवन की आधारशिला ही गंभीर तो उस पर जो भवन खड़ा होगा वह स्थायी रहेगा। आज की शिक्षित नारी समय और शिक्षा दोनों के महत्त्व को जानती है। शिक्षा से ही आज प्रत्येक क्षेत्र में नारी की सक्रिय भूमिका देश के निर्माण में लगी है। वर्तमान समय में नारियाँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी हैं। आज की नारी ने अपनी शक्ति को पहचाना है। आज की साबित किया है। नारी ने अपनी शक्ति को पहचाना है।

आजकल महिलाएँ शिक्षा के माध्यम से अपनी स्थिति को बदलने की पुरजोर कोशिश में लगी हैं। नारी के लिए तो जन्म लेने से मृत्यु तक इसी सफर को तय करना होता है। शिक्षा के क्षेत्र भी इसमें अधूरा नहीं है। उसके लिए हर दिन, हर पल, हर समय, हर साल, हर उम्र के बढ़ते इस दौर में भी परीक्षा की कठिन घड़ी होती है। जिससे मुकाबला करके उसे हर कदम आगे ही आगे चलना होता है और हर परीक्षा को पार करके अपने जीवन की यात्रा को समाज, परिवार में सार्थक बनाना होता है। स्त्री-शिक्षा की वर्तमान स्थिति में पूरा सुधार हुआ है। नारी दुनिया के कोने-कोने में घटित होने वाली घटनाओं का ज्ञान रखती हैं वह अपने जीवन जीने के तरीके में भी आमूल परिवर्तन लाने के लिए उत्सुक हैं। इसके साथ ही उसका सारा ध्यान राष्ट्र के नव-निर्माण की ओर भी लगा है। इस प्रकार समय के परिवर्तन के साथ शिक्षा जैसे सशक्त माध्यम से आज की नारी स्वयं सशक्त बनकर विभिन्न व्यवसायों एवं सेवाओं से जुड़ती जा रही है।

संदर्भ-


1. भारतीय शिक्षा प्रणाली, निशा द्विवेदी, डॉ. गोपाल कृष्ण शेवड़े, पृ. 68
2. काणे, पांडुरंग वामनः धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 250
3. भारतीय महापुराणों के शिक्षाप्रद विचार, डॉ. हरिवंश अनेजा, पृ. 145, अनुरोध प्रकाशन, नई दिल्ली
4. प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति, कृष्ण कुमार, पृ. 4
5. आधुनिक हिन्दी निबन्ध, डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित, पृ. 305
6. वैदिक शिक्षा मीमांसा, डॉ. भास्कर मिश्र, पृ. 29



*शोधार्थिनी, हिन्दी, अविनाशिलिंगम विश्वविद्यालय, कोयम्बत्तूर, तमिलनाडू*

***prof. Avinashilingam university for women***